इंडो-इस्लामी वास्तुकला

इंडो-इस्लामिक आर्किटेक्चर के पीछे का इतिहास क्या है?

- इस्लाम सातवीं और आठवीं शताब्दी (CE) में स्पेन और भारत में फैल गया। इस्लाम भारत में छह सौ साल बीतने के बाद, खासकर मुस्लिम व्यापारियों, संतों और विजेताओं के साथ आया।
    - तेरहवीं शताब्दी की शुरुआत में उत्तरी भारत पर तुर्की की विजय के बाद स्थापित दिल्ली सल्तनत के तहत बड़े पैमाने पर निर्माण गतिविधि शुरू हुई।
- इन प्रवासन और विजयों का एक उल्लेखनीय पहलू यह था कि मुसलमानों ने स्थानीय संस्कृतियों और परंपराओं की कई विशेषताओं को आत्मसात किया और उन्हें अपने स्वयं के स्थापत्य प्रथाओं के साथ जोड़ा, जिसके परिणामस्वरूप स्थापत्य तत्वों में संशोधन हुआ।
    - कई शैलियों को प्रदर्शित करने वाली उन स्थापत्य संस्थाओं या श्रेणियों को इंडो-सारासेनिक या इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के रूप में जाना जाता है।
- हिंदुओं ने अपने धार्मिक विश्वास के हिस्से के रूप में हर जगह कई रूपों में भगवान की अभिव्यक्तियों की कल्पना की, जबकि मुसलमानों ने मुहम्मद के साथ केवल एक को अपना पैगंबर माना।
    - इसलिये हिंदुओं ने सभी सतहों को मूर्तियों और चित्रों से सजाया। मुसलमानों, जिन्हें किसी भी सतह पर जीवों को दोहराने से मना किया गया था, ने अपनी धार्मिक कला और वास्तुकला का विकास किया जिसमें प्लास्टर और पत्थर पर अरबी, ज्यामितीय पैटर्न और सुलेख की कला शामिल थी।

इंडो-इस्लामिक आर्किटेक्चर की विभिन्न विशेषताएँ क्या हैं?

संरचना की टाइपोलॉजी

- धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए दैनिक प्रार्थना के लिये मस्जिदों, जामा मस्जिदों, मकबरों, दरगाहों, मीनारों, हमामों, औपचारिक रूप से बनाए गए उद्यानों, मदरसों, सरायों या कारवांसराय, कोस मीनारों आदि जैसे वास्तुशिल्प भवनों का निर्माण एक समयावधि में किया गया था।
- सारासेनिक, फारसी और तुर्की प्रभावों के बावजूद, भारतीय-इस्लामी संरचनाएँ भारतीय वास्तुकला और सजावटी रूपों की प्रचलित संवेदनाओं से काफी प्रभावित थीं।

शैलियों की श्रेणियाँ

- इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का अध्ययन पारंपरिक रूप से वर्गीकृत किया गया है:
    - शाही शैली (दिल्ली सल्तनत)
    - प्रांतीय शैली (मांडू, गुजरात, बंगाल और जौनपुर)
    - मुगल शैली (दिल्ली, आगरा और लाहौर)
    - दक्कनी शैली (बीजापुर, गोलकुंडा)

सजावटी स्वरूप

- इन रूपों में चीरा लगाकर प्लास्टर पर डिज़ाइनिंग शामिल थी। डिज़ाइन या तो सादे छोड़ दिये गए थे या रंगों से ढके हुए थे।
- रूपांकनों को भी पत्थर पर चित्रित या उकेरा गया था। इन रूपांकनों में फूलों की किस्में शामिल थीं, दोनों उपमहाद्वीप और बाहर के स्थानों, विशेष रूप से ईरान से।
    - वस्त्रों और कालीनों पर छतों को सजाने वाले फूलों के रूपांकनों के कई डिज़ाइन भी पाए गए।
- मेहराब के भीतरी वक्रों में कमल की कली के किनारे का उपयोग अत्यधिक किया गया था।
- मेहराब सादे और स्क्वाट थे और कभी-कभी ऊँचे और नुकीले होते थे।
- दीवारों को सरू, चिनार और अन्य पेड़ों के साथ-साथ फूलों के गुलदस्ते से भी सजाया गया था।
- 14वीं, 15वीं और 16वीं शताब्दी में दीवारों और गुंबदों की सतह के लिये भी टाइलों का इस्तेमाल किया जाता था।
- अन्य सजावट में उच्च (त्रि-आयामी रूप) और कम नक्काशी और जालियों का अत्यधिक उपयोग शामिल था।

- विशेष रूप से दीवारों के डेडो पैनलों में सतह की सजावट के लिये टेसलेशन (मोज़ेक डिज़ाइन) और पित्रा-दूरा की तकनीकों का उपयोग किया गया था।
- छत केंद्रीय गुंबद और अन्य छोटे गुंबदों, छतरियों और छोटी मीनारों का मिश्रण थी।

डैडो पैनल्स	पित्रा-दूरा
//	

भारत-इस्लामी वास्तुकला के घटक क्या हैं?

- **मीनारें**
  - स्तम्भ के रूपों में से एक मीनार उप-महाद्वीप में एक सामान्य विशेषता थी। मध्ययुगीन काल की दो सबसे आकर्षक मीनारें दिल्ली में कुतुब मीनार और दौलताबाद किले में चांद मीनार हैं।
  - मीनार का दैनिक उपयोग अज़ान के लिये होता था। हालाँकि इसकी अभूतपूर्व ऊँचाई शासक की शक्ति और शक्ति का प्रतीक थी।
- **मकबरों**
  - शासकों और राजघरानों की कब्रों पर स्मारक संरचनाएँ मध्यकालीन भारत की एक लोकप्रिय विशेषता थी। ऐसे मकबरों के कुछ प्रसिद्ध उदाहरण दिल्ली में गयासुद्दीन तुगलक, हुमायूं, अब्दुर रहीम खान-ए-खाना, आगरा में अकबर और इत्मादुद्दौला के हैं।
  - दीवारों पर कुरान की आयतों की शुरुआत के साथ, मकबरे को बाद में, बगीचे या पानी के पास या दोनों के रूप में "स्वर्ग के तत्त्वों" के भीतर रखा गया था, जैसा कि हुमायूँ के मकबरे और ताजमहल के मामले में है, जो इस प्रकार है: चारबाग शैली (कुरान के स्वर्ग की चार नदियों के साथ एक चार चतुर्भुज उद्यान)।
  - संरचित और शैलीगत स्थानों का इतना विशाल विस्तार वहां दफनाए गए व्यक्ति की महिमा, भव्यता और शक्ति को दर्शाता है।
- **सराय**
  - सराय मुख्य रूप से एक साधारण वर्ग या आयताकार योजना पर बनाए गए थे और भारतीय और विदेशी यात्रियों, तीर्थयात्रियों, व्यापारियों, व्यापारियों आदि को अस्थायी आवास प्रदान करने के लिये थे।
  - वास्तव में, सराय सार्वजनिक स्थान थे जो विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों द्वारा आबाद थे। इससे स्थानीय संस्कृति और व्यक्तिगत स्तर पर अंतर-सांस्कृतिक संपर्क, प्रभाव और समकालिक प्रवृत्तियाँ पैदा हुईं।

आम लोगों के लिये संरचनाएँ

- मध्ययुगीन भारत की स्थापत्य सुविधाओं में से एक समाज के गैर-शाही वर्गों के सार्वजनिक और निजी स्थानों में शैलियों, तकनीकों और सजावट का एक साथ आना भी था।
- इनमें घरेलू उपयोग के लिये भवन, मंदिर, मस्जिद, खानकाह (सूफी संतों का आश्रम) और दरगाह, स्मारक द्वार, इमारतों और उद्यानों में मंडप, बाजार आदि शामिल थे।

भारत-इस्लामी वास्तुकला के उदाहरण क्या हैं?

- **मांडू शहर**
  - यह मध्य प्रदेश में स्थित है। मांडू की प्राकृतिक सुरक्षा ने परमार राजपूतों, अफगानों और मुगलों द्वारा लगातार इसे प्रोत्साहित किया। होशंगशाह द्वारा स्थापित गौरी राजवंश (वर्ष 1401-1561) की राजधानी के रूप में, इसने बहुत प्रसिद्धि पाई।
  - मांडू कला और वास्तुकला की मध्यकालीन प्रांतीय शैली का एक विशिष्ट प्रतिनिधित्व है।
  - मांडू की प्रांतीय शैली की वास्तुकला को दिल्ली की शाही संरचनाओं के बहुत करीब माना जाता है साथ ही, स्थानीय परंपराओं का भी एक साहसिक प्रमाण दिखता है।
  - इंडो-इस्लामिक वास्तुशिल्प अनुभव का एक महत्त्वपूर्ण पहलू संरचनाओं का हल्कापन था।
  - यह आधिकारिक और आवासीय-सह-आनंद महलों, मंडपों, मस्जिदों, कृत्रिम जलाशयों, बावड़ियों, तटबंधों आदि का एक जटिल मिश्रण था।

- **ताज महल**
  - ताजमहल आगरा में स्थित है। यह मुगल वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है, जो महिमा और समृद्धि का सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन है। इसका निर्माण शाहजहाँ की पत्नी अर्जुमंद बानू बेगम/मुमताज़ महल की याद में किया गया था।
  - इसमें मुगल वास्तुकला की सभी विशेषताएँ थीं जिनमें सुलेख, पित्रा-दुरा कार्य, फोरशॉर्टिंग तकनीक, चारबाग शैली के बगीचे और सजावट के लिये परिसर में पानी का उपयोग शामिल था।
- **कुछ अनूठी विशेषताएँ हैं:**
  - ताजमहल में जाली का काम लेस जैसा है और बेहद बारीक है।
  - संगमरमर पर की गई नक्काशी कम उभरी हुई थी

- **गोल गुंबद**
    - गोल गुंबद कर्नाटक के बीजापुर में स्थित है। यह बीजापुर के आदिल शाही राजवंश (वर्ष 1489-1686) के सातवें सुल्तान मुहम्मद आदिल शाह (वर्ष 1626-1656) का मकबरा (कब्रों का समूह) है।
    - स्वयं शासक द्वारा निर्मित, अधूरा होने के बावजूद यह एक उल्लेखनीय इमारत है।
    - मकबरा इमारतों का एक परिसर है जैसे एक प्रवेश द्वार, एक नक्कार खाना (ड्रम हाउस), एक मस्जिद और एक बड़ी दीवार वाले बगीचे के भीतर स्थित एक सराय।
    - गुम्बद एक विशाल वर्गाकार इमारत है जिसके शीर्ष पर एक वृत्ताकार ड्रम होता है जिसके ऊपर एक राजसी गुंबद होता है, जिससे उस इमारत का नामकरण होता है। इमारत दो सौ फीट से अधिक की ऊंचाई तक बढ़ जाती है।
    - यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गुंबद है।
    - गुंबद के ड्रम के साथ, एक फुसफुसाती (Whispering) गैलरी है जहाँ ध्वनियाँ कई गुना आवर्धित हो जाती हैं और प्रतिध्वनित होती हैं।

- **जामा मस्जिद**
  - मध्यकाल में विशाल स्थानों में फैली बड़ी मस्जिदें भी भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाती थीं। हर शुक्रवार दोपहर यहां सामूहिक प्रार्थना होती थी।
  - प्रार्थना में न्यूनतम चालीस मुस्लिम पुरुष वयस्कों की उपस्थिति की आवश्यकता थी।
  - मध्ययुगीन काल में एक शहर में एक जामा मस्जिद होती थी, जो अपने आस-पास के परिवेश के साथ-साथ मुस्लिम और गैर-मुस्लिम दोनों लोगों के जीवन का केंद्र बन जाती थी।
  - ऐसी मस्जिद एक खुले प्रांगण के साथ थी, जो तीन तरफ से मठों और क़िबला लीवान से घिरी हुई थी। यहाँ इमाम (मस्जिद में नमाज़ अदा करने वाला व्यक्ति) के लिये मेहराब और मिम्बर (मस्जिद में एक उपदेशक द्वारा एक मंच के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली सीढ़ियों की एक छोटी उड़ान) स्थित थे।

- **कुतुब मीनार**
    - कुतुब मीनार, 13वीं शताब्दी में निर्मित, एक 234 फुट ऊँचा पतला टॉवर है जो पाँच मंजिलों में विभाजित है। मीनार बहुभुज और वृत्ताकार आकृतियों का मिश्रण है। यह काफी हद तक लाल और बफ बलुआ पत्थर से बना है।
    - यह अत्यधिक सजी हुई बालकनियों और शिलालेखों के बैंड की विशेषता है, जो पत्तेदार डिजाइनों के साथ जुड़े हुए हैं।

- **चाँद मीनार**
    - यह 14वीं शताब्दी में बनाया गया था, यह चार मंजिलों में विभाजित एक मीनार है। अब पीच रंग से चित्रित इसके अग्रभाग में शेवरॉन-पैटर्न वाले एनास्टिक टाइल का काम और कुरान की कविता के बैंड थे।
    - यद्यपि यह एक ईरानी स्मारक की तरह दिखता था, यह दिल्ली और ईरान के स्थानीय वास्तुकारों की संयुक्त कार्य था।

- **हुमायुं का मकबरा**
    - वर्ष 1570 में निर्मित इस मकबरे का विशेष सांस्कृतिक महत्त्व है क्योंकि यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा था।
    - यह हुमायूँ के पुत्र, महान सम्राट अकबर के संरक्षण में बनाया गया था।
    - इसे 'मुगलों का शयनागार' भी कहा जाता है क्योंकि 150 से अधिक मुगल परिवार के सदस्यों को कोठरियों में दफनाया गया है।
    - संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने वर्ष 1993 में इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी।

अन्य उदाहरण

- **लाल किला:**
    - वर्ष 1618 में शाहजहाँ द्वारा निर्मित, जब उसने राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। यह मुगल शासकों का निवास स्थान था।
    - यूनेस्को ने वर्ष 2007 में इसे विश्व विरासत स्थल के रूप में नामित किया।
- **बादशाही मस्जिद:**
    - औरंगजेब के शासनकाल में निर्मित। वर्ष 1673 में पूरा होने के समय यह दुनिया की सबसे बड़ी मस्जिद थी। यह पंजाब के पाकिस्तानी प्रांत की राजधानी लाहौर में स्थित है।
- **आगरा का किला:**
    - अकबर के शासनकाल के दौरान शुरू हुए पहले निर्माणों में से एक।
    - अकबर के शासन काल में इस किले के अंदर उसके हरम में 5000 से अधिक महिलाएँ रहती थीं।
- **फतेहपुर सीकरी:**
    - फतेहपुर सीकरी में अकबर द्वारा एक नई राजधानी शहर का निर्माण इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के मुख्य आकर्षणों में से एक था।
    - इसे इतिहास में एक फ्रीज़ हुए क्षण के रूप में वर्णित किया गया है क्योंकि यहां की इमारतें हिंदू और फारसी शैलियों के एक अद्वितीय मिश्रण का प्रतिनिधित्व करती हैं।

शहर के अंदर कुछ महत्त्वपूर्ण इमारतें इस प्रकार हैं:

- बुलंद दरवाजा
- सलीम चिश्ती का मकबरा
- पंच महल
- जोधाबाई का महल या मरियम-उज़-ज़मानी का महल

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/indo-islamic-architecture